पाठ- 8 : दो कलाकार

मूल भाव

यह मन्नू भंडारी की सुप्रसिद्ध कहानी है जिसमें समाज-सेवा को कला का दर्जा देने पर बल दिया गया है। यह प्रस्तुत किया गया है कि चित्रों की अपेक्षा समाज-सेवा में कला की सच्ची संवेदना है। दूसरों की पीड़ा से अनुप्रेरित होने के कारण समाज-सेवा, चित्रकला से अधिक उपयोगी है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कहानीकार ने ऐसी स्थितियों और घटनाओं का चयन किया है, जिसमें दोनों ही मुख्य बिंदु उभरकर प्रकट होते हैं ।

कहानी के तत्वों के आधार पर समीक्षा

कथानक

चित्रा और अरुणा दो अच्छी दोस्त। हास्टल में एक साथ रहना।	चित्रा का अपना नया चित्र अरुणा को दिखाना।	चित्रा का एक प्रतिभाशाली कलाकार होना।	अरुणा का गरीबों के बच्चों को पढ़ाना और फुलिया दाई के बच्चे को बचाने का प्रयास करना।	चित्रा का मृत भिखारिन और उसके बच्चों का चित्र बनाना और विदेश गमन।	चित्रा का देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करना।	अरुणा का मृत भिखारिन के बच्चों का गोद लेना।	दोनों सखियों का मिलन और एक की श्रेष्ठता।

पात्र और चरित्र-चित्रण - अरुणा

- अरुणा एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है जो संस्कारों से परोपकारी तथा कर्म के प्रति समर्पित है। वह समाज सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है। कभी वह आस-पास के बच्चों को पढ़ाती है तो कभी बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती है। इन कार्यों की वजह से वह अपनी पढ़ाई की भी उपेक्षा कर देती है।
- वह लोगों के दुख-दर्द को हर लेने में ही जीवन की सार्थकता समझती है। वह चित्रा से कहती है, 'कागज़ पर निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य भी है और साधन भी किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे।' वह कला और जीवन को लेकर कई बार चित्रा से बहस करती दिखाई देती है।
- अरुणा न केवल समाज सेविका है बल्कि अपने संबधों के प्रति भी पूर्णतः जागरूक है। वह अपनी सखी चित्रा का बराबर ध्यान रखती है। जब वह चित्रा के विदेश जाने की बात सुनती है तो उसके साथ बिताए छह वर्षों के चित्रा उसकी आँखों के सामने घूमने लगते हैं।
- वह भिखारिन के रोते-चीखते दोनों बच्चों को सँभालती है और उन्हें अपने पास रख कर भरण-पोषण करके नया जीवन देती है।
- अरुणा के हृदय में सच्ची संवेदना है। दया, करुणा, मैत्री, परोपकार तथा सहानुभूति से भरा उसका हृदय कर्म के प्रति अनुप्रेरित करता रहता है।

चित्रा

- चित्रा धनी पिता की इकलौती संतान है। वह चित्राकला की छात्रा है और महत्त्वाकांक्षी है। कोई भी चित्रा जब पूरा हो जाता है उसे दिखाने का उसे शौक है इसीलिए तो वह सोती हुई अरुणा को उठा कर अपना नया चित्रा दिखाती है।
- कला में लगन के साथ-साथ चित्रा विनोदी स्वभाव की छात्रा है इसीलिए अपने हॉस्टल में वह इतनी लोकप्रिय है कि रेलवे स्टेशन पर अनेक छात्राएँ उसे विदा करने आती हैं।
- देश काल और वातावरण
- आधुनिक काल खंड में भारतीय समाज के वातावरण को दर्शाती है। चित्रा और अरुणा दो सहेलियाँ हैं जो हास्टल में रहती हैं। लेखिका ने उन्हें हास्टल में रहते हुए दिखा कर आधुनिक भारतीय समाज के वातावरण को दर्शाया है।
- इस कहानी में दोनों सहेलियाँ स्वतंत्र हैं, खुले विचारों की हैं। दोनों अपने पुरुष मित्रों के बारे में खुलकर बातें करती हैं और इसे बुरा नहीं मानतीं।
- आधुनिक शिक्षा और सोच के कारण किस तरह हमारे समाज में बदलाव आया है उससे समाज में महिलाओं की आज़ादी, उन्हें भी पुरुषों की तरह अपने जीवन का निर्णय लेने और समय से काम करने की परंपरा विकसित हुई है।
- दोनों में भरपूर आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता है।

संवाद

- छोटे-छोटे संवादों के माध्यम से कहानी को विकसित किया गया है। कहानी जहाँ हास-उपहास से आरंभ होती है वहीं इसका अंत अत्यंत कारुणिक है।
- पूरी कहानी में आम बोल-चाल के छोटे-छोटे संवाद हैं।
- मन्नू भंडारी की इस कहानी की महत्वपूर्ण विशेषता है - आत्मीयता।

भाषा-शैली

- बोलचाल की भाषा। मन्नू भंडारी की इस कहानी में भाषा के उक्त सभी गुण दिखाई देते हैं। हाँ, परिवेश और पात्रा के अनुसार भाषा बदलती रहती है। बोल-चाल की भाषा का नमूना देखिए- *'क्यों बड़-बड़ कर रही है। ले मैं आ गई। चल, बना चाय' 'तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।' तूने तो पढ़ ली होगी, फाड़कर।' 'चल हट।'*
- कहानी के संवादों से दोनों सखियों की उपहास वृत्ति की झलक मिलती है।
- संवाद छोटे, मुहावरेदार, असरदार और सरल हैं।
- भाषा आत्मीयता और सहजता के गुणों से युक्त है।
- वाक्य छोटे हैं तथा तद्भव और देशज शब्दावली के साथ-साथ बोलचाल की अंग्रेज़ी और उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।
- अंग्रेज़ी शब्दों में लैक्चर, बोर, आइडिया, कंफ्यूजन, प्रिंसिपल, वार्डन जैसे अनेक शब्द हैं तो उर्दू के इम्तिहान, हुनर, बहस, अखबार, खस्ता, हालत आदि जैसे बोल-चाल के साधारण शब्दों का प्रयोग है।
- मन्नू जी की अपनी विशेषता है कि वे कहानी की स्थिति के अनुसार भाषा-व्यवहार का पूरा ध्यान रखती है।

उद्देश्य

- समाज-सेवा को सहज रूप से उत्तम सिद्ध करना चाहा, और यह बताया कि मानवीय संवेदनाओं से भरा व्यक्ति ही सच्चा कलाकार हो सकता है।

एक उदाहरण

- 'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे', 'दुनिया की बड़ी से बड़ी घटना भी इसे आंदोलित नहीं करती, जब तक उसमें कला के लिए कोई स्थान न हो'

अपना मूल्यांकन करें

मन्नू भंडारी की लेखन कला की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

आप जीवन में समाज सेवा को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

दो उदाहरणों के माध्यम से सिद्ध कीजिए कि अरुणा इस कहानी की मुख्य पात्र है।